डा0 भीमराव अम्बेडकर एंव अन्य दलित सुधारवादी आन्दोलन

***नुसरत**

सांराश– प्रस्तुत शोधपत्र दलितों के सुधारवादी आन्दोलन के विश्लेषण से सम्बन्धित है। दलित आन्दोलन युग का शुभारंभ बुद्धकाल से शुरु होकर अम्बेडकर काल तक चला ड़ा0 अम्बेडकर के समय दलित आन्दोलन सम्पूर्ण भारत में फैल चुका था। डा0 अम्बेडकर ने फुले को अपना राजनीतिक गुरु माना, इसी बात से समझा जा सकता है कि ज्योतिबा राव फुले कितने महान क्रांतिकारी थे। इसके अलावा अनेक दलित समाज सुधारकों ने भी दलितों के उत्थान हेतु अनेक प्रयास किये इन दलित आन्दोलनों की सफलता के परिणामस्वरुप स्वतंत्र भारत में संविधान की रचना हुयी दलित जातियों को विशेष अधिकार प्राप्त हुए आज दलितों की थोड़ी बहुत उन्नति हुई है वह सब इन आन्दोलनो का ही परिणाम है।

उद्देश्य– डा0 भीमराव अम्बेडकर के दलित समाज में चेतना जागरण का अध्ययन कर दलित आन्दोलनों का दलित समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना। अनेक सुधारवादी आन्दोलनो के पश्चात दलित वर्ग की स्थिति का अध्ययन करना

शोध प्रविधिः–प्रस्तुत शोधपत्र में विषय से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु द्वितीयक स्रोत्रों जैसे– पुस्तकों, पत्रिकाओं शोध ग्रन्थों का अध्ययन किया गया है एवं साथ ही ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, एवं वर्णात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

डा0 भीमराव अम्बेडकर भारत में दलितों निर्बलों गरीबों तथा हरिजनों के लोकप्रिय नायक थे। वह विधिवेत्ता, बहुजन राजनीतिक नेता और एक बौध्द पुनरुत्थानवादी होने के साथ–साथ भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार भी थे। बाबासाहब अम्बेडकर ने अपना सारा जीवन हिन्दू धर्म की चतुवर्ण प्रणाली और भारतीय समाज में सर्वव्यापित जाति व्यवस्था के विरूद्ध संघर्ष में बिता दिया। उन्होने बौध्द महाशक्तियों के दलित आन्दोलन का प्रारम्भ भी किया। बाबा साहब अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरूस्कार है।

स्वतनत्रता प्राप्ति के पश्चात् पण्डित जवाहर लाल नेहरू की अंतरिम सरकार में विधि मंत्री के रूप में डा0 अम्बेडकर को नियुक्त किया गया। स्वतन्त्र भारत हेतु संविधान– निमार्ण किया गया। स्वतन्त्र भारत हेतु संविधान –निमार्ण का गुरुतर कार्य उन्होने अपने कन्धों पर लिया वह लगभग ढाई साल की कड़ी मेहनत के बाद संविधान का प्रारूप तैयार करने तथा संविधान सभा द्वारा उसे पारित कराने में सफल हुए तथा इसके अलावा डा0 भीमराव अम्बेडकर ने दलितों की स्थिति सुधारने तथा उन्हें दलित वर्ग को उनको अधिकार दिलाने के जीवनभर प्रयास किया तथा दलितों के साथ होते भेदभाव पूर्ण सामाजिक वातावरण को बदलने का प्रयास किया। राजनीतिक विचारक के रूप में हिन्दू वह समतावादी समाज की स्थापना के समर्थक थे तथा हिन्दू सामाजिक व्यवस्था को इसके मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मानते थे, जिन्होने हिन्दू व्यवस्था के सीधी कार्यवाही के रूप में खुला विद्रोह किया और इस आन्दोलन को दलितों का आन्दोलन बनाया। अम्बेडकर की मान्यता थी कि समाजिक व्यवस्था में वांछित परिर्वतनों के लिए स्वयं दलित वर्गो को जागरूक और और संगठित होना होगा। इसके लिए वे बुद्ध के आदेश का स्मरण कराते हैं **कि हे आन्नद ! तुम स्वयं अपना प्रकाश बनो, तुम स्वयं ही अपनी शरण में जाओ किसी अन्य की शरण कभी न लो।** अम्बेडकर दलित वर्ग के उत्थान के लिए अहिंसात्मक संघर्ष में जुट गये और जीवन भर कार्य में लगे रहे।

अम्बेडकर ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उत्पीड़ित समूह को अपने भीतर से नेतृत्व पैदा करना चाहिए, किसी अन्य समूह की सहानुभूति या नेतृत्व के सहारे उसे अपने उत्थान की आशा नहीं करनी चाहिए। डा0 अम्बेडकर का कहना है कि जातिवाद ने अस्पृश्यों को सामाजिक रूप से अक्षम निम्न आर्थिक दृष्टि से हीन और राजनीतिक दृष्टि से उदार बना दिया है। डाॅ0 अम्बेडकर के अनुसार वर्णाविहीन और शस्त्र विहीन बनाकर रखा है। स्वयं डाॅ0 अम्बेडकर कहते है कि जाति

*शोध छात्रा, राजनिति विज्ञान विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

संस्था का नाश ही समानता का निर्माण है और इसके लिए अर्न्तजातीय विवाह होना तथा पुरोहिताई के व्यवसाय का प्रजातंत्री करण करना अनिवार्य है। समाज में क्रान्ति लाने के लिए स्वयं डाॅ0 अम्बेडकर ने आनुवांशिक कार्यभार कानून को समाप्त करने का प्रयास किया और अन्तजातीय विवाह का समर्थन किया। उन्होंने नारा दिया कि, **दलितो, शिक्षित बनो, एकत्रित रहो व सघर्ष करो**, दलितों की मुक्ति उनके जीवन का लक्ष्य था। उनकी मान्यता थी कि जितनी जरूरत देश को अजादी की थी उससे कहीं अधिक जरूरत दलितों को सामाजिक मुक्ति की है। इसलिए कहते है कि राष्ट्र की आजादी के लिए संघर्ष करने के बजाए मैं दलितों की मुक्ति के लिए लड़ना ज्यादा पसंद करूगा। डाॅ0 अम्बेडकर ने अपना संघर्ष तीन दशकों से भी ज्यादा समय के लिए चलाया डॉ0 अम्बेडकर ने जनजागरण की ज्योति जलाई और दलितों के सामाजिक, धार्मिक अधिकारों के लिए लम्बा संघर्ष छेड़ा तथा दलितों को उनके अधिकार दिलाने का भरसक प्रयास किया।

अम्बडेकर और दलित जागरण

अम्बेडकर एक विचारक, समाज सुधारक और संविधान विद मात्र नहीं थे, वे एक युग का प्रतिनिधित्व करते थे अम्बेडकर ने दलितों की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेको आन्दोलन किये। अम्बेडकर का मानना था कि अस्पृश्यता की समस्या की जड़ जाति व्यवस्था में है। और इसका निराकरण धर्म पर आधारित जाति व्यवस्था को मनुष्य के व्यय में परिवर्तित करके करना चाहते है। इसका निराकरण समाजवादी अर्थव्यवस्था लागू करके किया जा सकता है।

अम्बेडकर ने दलित वर्गों के उत्थान के लिए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एंव नैतिक इत्यादि स्तरों पर संगठित अभियान एंव कार्यों को संचलित किये जाने की अवश्यकता पर बल दिया। अम्बेडकर ने दलितों को त्रिसूत्रीय उपदेश दिया– **"शिक्षित बने, संगठित रहो, सघर्ष करो"** सन् 1929 के धारवाड़ में अम्बेडकर ने भाषण में कहा था कि– **"सच्ची प्रगति राजनीतिक ताकत हाथ में आने पर ही सम्भव हो पाती है।"**

प्रधानमंत्री मैक्डोनाल्ड के अगस्त 1932 के साम्प्रयायिक अधिनिणीय ने दलितो को स्वतन्त्र मतदान सघं और सुरक्षित स्थान दोनों अधिकार प्रदान कर दिये सभा ही वे हिन्दू प्रतिनिधियो के चुनाव मे भी मताधिकार का प्रयोग कर सकते है। नागपुर मे डा0 अम्बेडकर ने 14 नवम्बर 1956 ई को **भिक्षु चन्द्रमणी महास्थविर** से त्रिसरण पंचशील ग्रहण कर **बौद्ध धर्म** की दीक्षा ली इस समय अम्बेडकर ने 22 प्रतिज्ञाये भी ली। अछुतों के लिए अलग दायरा विकसित करने के लिए अम्बेडकर ने कई प्रयोग किये। सन् 1919 में साउथबरो समिति के सामने पृथक निर्वाचन मण्डल की मांग रखी। यह वह क्षण था जब आधुनिक भारतीय राजनीति मे इन जातियों के हितों को सुरक्षित करने का आन्दोलन शुरू हुआ। जो किसी न किसी रूप मे आज भी जारी है। सन् 1932 मे आयोजन द्वितीय गोलमेज सम्मेलन मे पृथक निर्वाचन मण्डल के प्रश्न पर अम्बेडकर ने गाँधी जी से जमकर लोहा लिया।

सन 1927 मे बाबा भीवराव अम्बेडकर की सिफारिश पर साइमन कमीशन का गठन हुआ। साइमन अग्रेज इसके अध्यक्ष थे। इसका एकमात्र उद्देश्य भी भारत में दलितों की दुर्दशा का सर्वे करना था उस समय देश में दलितों की स्थिति अच्छी नहीं थी महाराष्ट्र में पेशवाओं ने इतने जुल्म ढाये थे कि उनका वर्णन करना संभव नहीं है दलितों को दिन के समय सार्वजनिक गलियों में चलने का अधिकार नहीं था। उनकी स्थिति बड़ी ही खराब थी।

इसके अलावा अम्बेडकर ने दलितों के उद्धार के लिए 2 जुलाई 1942 को डा0 अम्बेडकर ने **कार्यकारिणी समिति** की सदस्यता ली, यह भारतीय समाज मे एक अपूर्ण घटना थी। इससे दलित समाज मे उत्साह एंव उल्लास का वातावरण पैदा हुँआ। 5 अप्रैल 1946 को डॉ0 अम्बेडकर अल्पसंस्थक प्रतिनिधि के तौर पर मिशन (24 मार्च 1946 को ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल मिशन, भारत आया) पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। मिशन योजना में दलितों की पूरी तरह उपेक्षा की गयी। जिससे महाराष्ट्र में आछूतों में जोश आ गया बम्बई में अछूतों (दलित समाज) ने 7 जुलाई 1946 को मिशन के प्रति विरोध प्रदर्शन किया।

अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में प्रमुख शिल्पी के रूप में संविधान का प्रारूप तैयार किया जिसमे दलितों के उद्धार

के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था की। डॉ0 अम्बेडकर ने दलितोत्थान की दिशा के लिए मुख्यतः निम्नलिखित कार्य किये–

- जाति प्रथा एंव वर्ण व्यवसथा का विरोध करना
- हीन भावनाओं एंव आदतो के परिव्यिाग पर बल
- शिक्षित बनो आन्दोलन करो, संमक्षित रहो का नारा दिया।
- समाज में क्रान्ति के लिए प्रयास करना।
- दलितो मे जन–जागृति लाने का प्रयास करना।
- दलित वर्गों के लिए विधानमण्डलों में पृथक और पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिलाना।
- प्रशासन में दलित वर्गों की भागीदारी के लिए सेवाओं में आरक्षण।
- भारतीय संविधान निर्माण और अस्पृश्यता निवारण। भारत में औद्योगिकरण इत्यादि।

इन सब कार्यों को करके तथा दलित वर्ग को इन कार्यों को करने के लिए प्रेरित करके डा0 अम्बेडकर दलितों की स्थिति में सुधार लाये।

अन्य दलित सुधारवादी आन्दोलन

स्वतंत्रता से पूर्व दलितों की स्थिति बहुत खराब थी उन्हें वे सामाजिक अधिकार नहीं दिये गये थे जो अन्य समाज में रहने वाले व्यक्ति को प्राप्त थे अन्य व्यक्ति दलितो को निम्न तथा अस्पृश्य समझते थे वह सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग नहीं कर सकते थे। तथा वह बाह्मणों के घर मे प्रवेश तक नहीं करते थे। इन सभी असमानता को समाप्त करने के लिए तथा दलित वर्ग की स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रयत्न किये तथा इसके लिए अनेक आन्दोलन किये गये। महात्मा बुद्ध ने **"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय"** का सन्देश लेकर जन आन्दोलन चलाया जिसके फलस्वरूप अशोक के काल में भारतीय दलित जो उस समय शुदतिशुद्र कहलाते थे की सामाजिक स्थिति में आमूलचूल परिर्वतन आया। समय–समय पर दलितों में महापुरूष होते रहे हैं। उन्होंने अपने समाज मे समानता लाने के लिए आन्दोलन किये **कबीर** भी उनमे से एक थे। जिन्होंने दलितों में जीवन भर जन जागृति लाने का कार्य किया कबीर के ही समकालीन **रविदास** को संत कहकर उनका अंत करने की कोशिश की गयी उन्होंने दलितों के दमन के विरूद्ध जंग छेड़ी। उन्हें केवल भगवान का भक्त बता दिया गया। सच तो यह है कि वह तत्कालीन समाजिक व्यवस्था जो गैर बराबरी पर आधारित थी, के विरोधी थे।

उन्होंने **जन–जागृति** आन्दोलन चालाया जो आगे सिख लोगों के लिए धर्म ही बन गये। सिख लोगों ने कबीर, नानक व रविदास के शब्दों को अपने धर्म का आधार बानाया। तथा आगे चलकर दलितों के उत्थान के लिए 20 वीं शताब्दी में संयुक्त पंजाब में **"आदि धर्म"** चलाया गया। भक्ति की धारा का विकास दक्षिण भारत में हुआ जिसका श्रेय **आलवार** और **नयनवार** संतो को है। भक्ति मार्ग के संतो ने जाति का विरोध किया उन्होंने यह घोषित किया कि कोई व्यक्ति भक्ति के मार्ग को अपनाकर मोक्ष कर सकता है। वास्तव में भक्ति आन्दोलन दलितों के उद्धार की दिशा में दूसरा बड़ा महत्वपूर्ण प्रयत्न था।

इसके अलावा अन्य विचारकों ने भी अनेक महत्वपूर्ण कथन उठाये जैसे ज्योतिबा फूले ने सर्वप्रथम महाराष्ट्र में पिछड़ों व दलितों के उत्थान के लिए **सव्य शोधक समाज** की स्थापना की। फुले ने जातिय भेद–भाव और बहमाण समाज प्रभुता को खुली चुनौती दी। देश में सर्वप्रथम पूना में अछूतों के लिए एक विद्यालय की स्थापना की तथा उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले ने विद्यालयों में सुधार किये जाने हेतु तथा समाजिक असमानता और जाति भेद के विरूद्ध भारत के विभिन्न भागों में **आदि आन्दोलनों** का सूत्रपात हुआ इन आन्दोलनों में आदि धर्म आन्दोलन **पंजाब आदि** हिन्दू आन्दोलन उत्तर प्रदेश में चलाया गया। जिसे स्वामी **अछूतानंद** ने चलाया। उनका बचपन का नाम हीरालाल था लेकिन आछूतों के समग्र विकास के लिए उन्होने अपना नाम बदलकर आछूतानंद कर लिया। जाटव दलित समाज में वे आदर की दृष्टि से एक सुधारक

के रूप में माने गए। इस प्रकार **आदि हिन्दू आन्दोलन** खड़ा किया तथा इस आन्दोलन को उत्तर भारत में काफी बल मिला।

आन्ध्र प्रदेश में **'आदि आंध्रा'** और कर्नाटक में **आदि कर्नाटक** आदि आन्दोलन चलाये गये तथा तमिलनाडु में **आदि द्रविण** नामक आन्दोलन उठाया गया ये सब आदि धर्म के आन्दोलन बौद्ध धर्म के ही आन्दोलन थे बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में **श्री नरायण गुरू स्वामी** ने दलितों की मुक्ति को दृष्टिगत रखते हुए **एक जाति, एक ईश्वर, एक धर्म** के सिद्धान्तों के आधार पर हिन्दू धर्म के समानातर एक नए धर्म का प्रतिपादन किया जो **श्री नरायण धर्म** के नाम से जाना जाता है। इस धर्म के प्रभाव स्वरूप केरल की एक भुतपूर्व अछूत जाति **झझावा** में श्री नरायण परिपालन आन्दोलनों का तेजी से प्रसार हुआ तथा समाजिक असमानता कम हुई। **राम स्वामी नायकर** ने **सेल्फ रिस्पेक्ट** मूवमेन्ट चलाया और अपने अनुपाथियों से बह्मण पुरोहित के स्थान पर अपना पुरोहित रखने को कहा। आगे चलकर इस आन्दोलन ने **द्रविण मुनित्र कजगम** आन्दोलन को जन्म दिया।

बगांल में **चांद गुरू (1850–1930)** और मध्य प्रदेष में गुरू **घासीयास** (1756) ने जातिय भेद–भाव के विरूद्ध तथा समतायुक्त व शोषण मुक्त समाज की स्थापना के लिए जन–जागरण किये। बींसवी शताब्दी के दूसरे दशक तक राष्ट्रीय आन्दोलन का सर्व प्रमुख उद्देष्य निरूपित किया तद्यापि सामाजिक तथा धर्मिक सुधार कार्यों को गाँधी जी ने कभी निविड़ में नहीं जाने दिया। गॉधी जी का लक्ष्य सर्वोदय समाज की स्थापना करना था सर्वोदय समाज से गॉधी जी का तात्पर्य एक समाज से था। जिसमे **सभी उन्नत हो, सभी सुखी हो,सभी के साथ न्याय हो।** सामाजिक प्रकृति मे सब समान रूप से भागीदार बने। और सभी को सामाजिक प्रकृति मे समान रूप से हिस्सा मिले। गॉधी जी की पहल में पूरे देश में 27 अक्टूबर 1932 तक देश में अस्पृश्यता निवारण सप्ताह मनाया गया। अमृत लाल बी0 टक्कर के नेतृत्व मे **अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग** की स्थापना की गई। गॉधी जी ने अस्पृश्यता को एक कलंक माना। उन का कहना था कि यदि अस्पृश्यता रहती है तो हिन्दू धर्म मिट जायेगा। यदि हिन्दू धर्म को जिवित रखना है तो अस्पृश्यता को मिटाना होगा गॉधी जी ने दलित लोगों को हरिजन नाम से सम्बोधित किया है वह हरिजन समाज समस्या को हिन्दू समाज की समस्या मानते थे। और इसका निवारण हिन्दू समाज के दायरे में ही करना चाहते थे। वह हरिजनों को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानते थे। इसलिए 20 सितम्बर 1932 को अस्पृश्त (दलितों) के पृथक निर्वाचन सम्बधित ब्रिटिश शासन के निर्णय के विरूद्ध उन्होंने आमरण–अनशन भी किया। तथा 30 सिंतम्बर 1932 को **हरिजन सेवक संघ की** स्थापना की।

इसके अलावा गढ़वाल निवासी और कोली जाती के अत्यंत मिलनसार बलदेव सिंह आर्य उत्तराखण्ड़ के प्रमुख सामाजिक कार्यकता, शिक्षाविद और समाज सुधारक थे। पहाड़ में दलितों को अलग–अलग नाम से नही जाना जाता। आज उन्हें शिल्पकार नाम से अनूसुचित जाति का दर्जा प्राप्त है। उन्होने दलित जाति में सुधार लाने के लिए ग्रामीण दस्तकारी गृह उद्योगो के जरिए आर्थिक स्थिति मजबूत करने का मंत्र दिया, क्योंकि ज्यादातर दलितों के पास कृषि योग्य भूमि नहीं थी और पूरा क्षेत्र उद्योग शून्य था। बलदेव सिंह आर्य ने सामाजिक कुरीति के विरूद्ध आवाज उठाई क्योंकि पहाड़ों में भी अस्पृश्यता और जातिवाद का घिनौना रूप था। गॉधी जी ने उनके अनोखे, अहिंसात्मक, असहयोग आन्दोलन की प्रशंसा की तो लोगों ने उन्हें **पहाड़ का गॉधी** कहा। इस प्रकार यदि हम देखें तो अनेक विचारकों तथा समाज सुधारकों ने समय–समय पर अनेक सुधारवादी आन्दोलन चलाये। तथा दलित वर्ग मे जन–जागरण भी किया तथा दलितों की स्थिति मे सुधार भी आया। वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ तथा उनका जीवन स्तर भी सुधरा।

निष्कर्ष

भारतीय समाज मे यद्यपि दलित वर्गो की स्थिति सुधारने के लिए अनेक आन्दोलन किये गये। तथा कुछ हद तक उनकी स्थिति मे सुधार भी आया। दलित जातियों ने शैक्षणिक एंव व्यवसायिक दृष्टि से प्रगति की फिर भी उनको समाज मे उच्च जातियों के समकक्ष स्थान प्राप्त नहीं है। इस वर्ग के सदस्य इस आधार पर हीन भावना से ग्रस्त है कि उनको उत्पत्ति क्रम मे उनका स्थान सबसे निम्न है एवं इसी निम्न उत्पत्ति के कारण उच्च जाति के सदस्य उन्हे समाज में समान दर्जा

देने को तैयार नहीं है। दलित जातियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। जैसे–जैसे दलित वर्ग शिक्षित हुआ वह सामाजिक असमानता का विरोध करने लगा। आज दलित वर्ग की थोड़ी बहुत उन्नति हुई है वह सब इन आन्दोलनों का परिणाम है। आज दलित वर्ग की स्थिति सुधरी सी नजर आती है और इसका श्रेय अनेक विचारकों एंव समाज सुधारकों को जाता है जिन्होंने दलित आन्दोलनों को सफल बनाकर दलितों को अधिकार प्रदान किया।

सन्दर्भ

- सिंह मुकेश : डा0 भीमराव अम्बेडकर, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2012
- मल, पूरण : डा0 भीवराव अम्बेकर, जीवन एंव विचार,पोइंटस, पब्जिशर्स, जयपुर 2003
- राय हिमांशु : बाबा साहब डा0 अम्बेडकर एक दृष्टि मे,रामकली प्रकाशन, नई दिल्ली 1991
- भारती रामविलास : बीसवी सदी में दलित समाज अनामिका पब्लिशर्स नई दिल्ली 2011
- मल, पूरण : दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय आविष्कार पब्लिशर्स जयपुर 2002
- चंचरीक के एल : भारतीय दलित आन्दोलन की रूपरेखा, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007
- तिवारी विवेकानन्द : आछूत मतदान के सच गॉधी और अम्बेडकर सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नई दिल्ली 2001
- सिंह ब्रजमोहन : समकालीन समाज मे दलित नीलकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2003